विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय -संस्कृत दिनांक 17-06-2021

वर्ग-षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

1. **प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)**—जो शब्द वाक्य में कर्ता के स्थान पर होते हैं, उनमें प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— मोहनः पठति। दिनेशः गच्छति। पत्रम् पतति। छात्रः लिखति।

2. **द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)**—जो शब्द वाक्य में कर्म के स्थान पर होते हैं, उनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— अहम् पत्रम् लिखामि। राधा जलम् पिबति। माता भोजनम् पचति। सुनीता पत्रम् पठति।

3. **तृतीया विभक्ति (करण कारक)**—जिन शब्दों से क्रिया के सम्पन्न होने में सहायता होती है, उनमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— मोहनः कलमेन लिखति। बालकः कन्दुकेन क्रीडति। राधा मुखेन खादति। जीवाः जलेन जीवन्ति।

4. **चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)**—जिसके लिए कार्य किया जाए, उस शब्द में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— छात्रः पठनाय गच्छति। मोहनः याचकाय भोजनं यच्छति। माता पुत्राय भोजनं पचति।

5. **पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)**—जिस शब्द से अलगाव (पृथकता) का बोध हो, उसमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे— वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। बालकः विद्यालयात् आगच्छति। अश्वात् सः पतति।

6. **षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक)**—जिस शब्द से किसी दूसरे (अन्य) शब्द से सम्बन्ध व्यक्त किया जाता है, उस शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—सुनीता मोहनस्य भगिनी अस्ति। वयम् भारतस्य नागरिकाः स्मः। गंगायाः जलम् पवित्रम् अस्ति।

7. **सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)**—जिन शब्दों से क्रिया का आधार व्यक्त होता है, उन शब्दों में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। अर्थात् क्रिया कहाँ हो रही है, यह व्यक्त होता है। जैसे—जले मीनाः तरन्ति। जनाः उद्याने भ्रमन्ति। वयम् दिल्लीनगरे वसामः।

8. **सम्बोधन कारक**—किसी को बुलाने, पुकारने या सम्बोधित करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उनमें सम्बोधन कारक होता है। इन शब्दों के साथ विस्मयादिबोधक चिह्न भी लगाया जाता है। जैसे— हे मित्र! त्वम् कुत्र गच्छसि? भो! त्वम् किम् खादसि? हे राम! त्वम् कुत्र असि? हे पुत्र! त्वम् किम् करोषि?

इन्हीं विभक्तियों और कारकों के आधार पर तीनों लिंगों में शब्द रूप चलते हैं।